कंचा - 2/2

टी पद्मनाभन

प्रस्तुतकर्ता – सत्यवीर गिरि

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय क्र.-३, तारापुर

कंचा

टी पदमनाभन जी का जन्म 1जनबरी 1931 ई, को चेन्नई के पल्लीकन्नू ,कण्णूर ,मालावार जिले में हुआ था >इनके पिता का नाम पुथिईदथ कृष्णन अय्यर तथा माता का नाम देवकी अम्मुकुट्टी था। इनके पिता जी का निधन बचपन में ही हो गया था। इनका पालन पोषण इनके माता और बड़े भाई ने किया था। इनकी शिक्षा दीक्षा मंगलौर और चेन्नई में हुई| इनको लघु कहानीकार के नाम से जाना जाता है। इन्होंने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा थलस्सेरी और कण्णुर कोर्ट में अभ्यास करने लगे । बाद में इनको FACT कंपनी में मैनेजिंग डाइरेक्टर के पद पर नियुक्त किया गया । इनको एज़्हुथचन वल्लठोल वैलर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुए है । आजकल ये सेवा निवृत्त होकर लेखन कार्य में जीवन गुजार रहे हैं ।

मास्टर जी द्वारा सचेत करना :- मास्टर जी भले ही पाठ समझाते जा रहे थे लेकिन अप्पू न जाने कहाँ खोया हुआ था | उसे तो वही कंचे याद आ रहे थे | सोच रहा था कि की जॉर्ज ठीक हो जाए तो उसके साथ खेलेगा | मास्टर जी उसके चेहरे से पहचान गए कि अप्पू का ध्यान पढाई में नहीं है | वे उसके पास गए और पूछना चाहा कि वे क्या पढ़ा रहे हैं ? वह अचानक बोल उठा - 'कंचा' | कक्षा के सभी बच्चे हैरान थे कि यह क्या हुआ | मास्टर जी क्रोधित हो उठे | अप्पू बैंच पर खड़ा हो गया लेकिन उसका ध्यान अभी भी कंचों में ही था | पाठ समाप्त हो गया | बच्चे पाठ से सम्बंधित कठिनाइयाँ मास्टर जी से पूछने लगे लेकिन अप्पू तो इस सोच में खोया था कि कंचे कैसे ख़रीदे जाएँ | क्या जॉर्ज को साथ ले जाने पर दुकानदार कंचे देगा ? या आएँगे कितने के ? पाँच पैसे के या दस पैसे के | मास्टर जी ने उससे पूछा –'क्या सोच रहे हो?' तो उसके मुँह से निकला –'पैसे' | मास्टर जी ने पूछा पैसे किसके लिए चाहिए, क्या रेलगाड़ी के लिए? वह बोला –'रेलगाड़ी नहीं कंचा' | चपरासी के कक्षा में आने के कारण मास्टर जी ने उसके इस उत्तर का जवाब न दिया |

चपरासी का फीस हेतु आना :- चपरासी ने कक्षा में मास्टर जी को एक नोटिस दिया | मास्टर जी नोटिस पढ़कर कहने लगे कि जो फीस लाए हैं वे ऑफिस में जमा करवा दें | सब बच्चों के साथ , राजन के सचेत करने पर अप्पू भी फीस जमा करवाने जाने लगा | पहले तो मास्टर जी ने मना किया परन्तु बाद में जाने दिया |

अप्पू का कंचे खरीदना :- उसने फीस न जमा करवाई, जबकि पिताजी ने उसे एक रुपया पचास पैसे दिए थे | उसके दिमाग में तो कंचे घूम रहे थे | सभी बच्चों ने फीस जमा करवा दी लेकिन अप्पू ने फीस जमा नहीं करवाई | जब वह घर जा रहा था तो उसकी चाल की तेजी बढ़ी वह उसी दुकान पर आकर रुका | दुकानदार उसे देखकर हँसा और बोला – 'कंचा चाहिए न ?' उसने सिर हिला दिया | दुकानदार ने कहा –'कितने कंचे चाहिए?' उसने जेब से एक रूपए पचास पैसे निकाले तो दुकानदार चौंक गया इतने सारे पैसे | साथ ही दुकानदार ने अपने-आप में यह आशंका भी लगा ली कि सब साथियों के मिलकर ले रहा होगा | दुकानदार से कंचे लेकर कागज की पोटली छाती से चिपकाकर आगे बढ़ने लगा |

कंचों का बिखरना :- उसने अपने कंचे देखने चाहे कि सब में लकीरें हैं या नहीं | पोटली खोलते ही सारे कंचे बिखर गए | वह झट से उठाकर एकत्रित करने लगा हथेली भर गई अब उसने बस्ते में रखने चाहे | अचानक ही सामने से कार आ गई | ड्राइवर गुस्सा खा रहा था कि उसने रास्ता रोका हुआ है लेकिन वह हँसकर ड्राइवर को भी कंचा दिखाने लगा तो ड्राइवर का गुस्सा भी उसके प्रति प्रेम में बदल गया |

माँ का कंचे देखना :- वह आज घर देर से पहुँचा तो माँ कुछ परेशान थी लेकिन वह खेल-खेल में माँ की आँखें बंद कर उसे कंचे दिखाने लगा | माँ ने पूछा कि इतने सारे कंचे कहाँ से लाया तो उसने सच बताया कि पिताजी द्वारा दिए गए पैसों से खरीदे हैं | पहले तो माँ हैरान रह गई कि उसने यह क्या किया लेकिन वह उससे बहुत प्रेम करती थी | उसे कुछ कहना भी नहीं चाहती थी | उसके दिमाग में एक बात कौंध गई कि कंचे किसके साथ खेलेगा | उसे अपनी मरी हुई बच्ची की याद आ गई और वह रोने लगी | अप्पू को लगा कि माँ को कंचे पसंद नहीं आए वह कहने लगा – “माँ! ये कंचे बुरे हैं न!” लेकिन माँ कहने लगी नहीं, अच्छे हैं | वह हँस पड़ा | माँ भी हँस पड़ी | माँ ने उसे गले लगा लिया क्योंकि वह सदा उसे खुश देखना चाहती थी |

शब्दार्थ

समाधान – उपाय
कंठ - गला
ख़ुशी के बुलबुले – प्रसन्नता से
झिझकता – शर्माता
दफ़्तर – कार्यालय
नज़दीक – पास
इंतज़ार – प्रतीक्षा
ज़रूरत – आवश्यकता
धीरज – हौसला
पोटली – गाँठ
हथेली – हाथ के बीच का भाग
निश्चय – पक्का इरादा

सकपकाना – घबराना
मग्न – मस्त
कच्चा खा जाना – बहुत क्रोध दिखाना
भीतर – अन्दर
हवा होना – भाग जाना
तस्वीर – फ़ोटो
दाँतों तले उँगली दबाना – हैरान होना
पलकें भीगना – रो पड़ना/ आँखों में आँसू आ जाना
सटा – साथ में जोड़ दिया
दिल से ख़ुशी छलकना – बहुत ख़ुश होना

प्रश्न/उत्तर

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1.
जब मास्टर जी अप्पू से सवाल पूछते हैं तो वह कौन सी दुनिया में खोया हुआ था? क्या आपके साथ भी कभी ऐसा हुआ है कि आप किसी दिन क्लास में रहते हुए भी क्लास से गायब रहे हों? ऐसा क्यों हुआ और आप पर उस दिन क्या गुजरी? अपने अनुभव लिखिए।

उत्तर

जब मास्टर जी कक्षा में रेलगाड़ी का पाठ पढ़ा रहे थे तो अप्पू तो कंचों की दुनिया में खोया था उसका ध्यान मास्टर जी के द्वारा पढ़ाए जाने वाले पाठ में बिलकुल न था।

मेरा अनुभव-बात पिछले वर्ष की है मेरा जन्मदिन था। घर में सब मेहमान आए थे। घर के बाहर तंबू लगा था। हमारे घर आने वाले रिश्तेदारों के बच्चे उसमें खेल रहे थे लेकिन मेरी उस दिन गणित की परीक्षा थी इसलिए माँ ने मुझे विद्यालय भेज दिया। आधी छुट्टी तक परीक्षा चल रही थी तो मुझे घर का ख्याल भी न आया लेकिन आधी छुट्टी के बाद जब पीरियड लगने शुरू हुए तो विज्ञान की अध्यापिका पढ़ा रही थी। मेरे दिमाग में कुछ नहीं आ रहा था क्योंकि मेरी आँखों के आगे तो घर का माहौल छाया था। इतने में अध्यापिका मेरे पास आई और पूछा कि तुम्हें प्रश्न समझ आ गया तो मैंने हाँ में उत्तर दे दिया लेकिन बहुत शर्म आई जब उन्होंने कहा कि तुम पढ़ क्या रही हो, पुस्तक तो तुम्हारी उल्टी पड़ी है। सच! मुझे बहुत शर्म आई। मैंने खड़े होकर सच अध्यापिका को बताया तो वे भी हँसने लगीं और मुझे 'जन्मदिन मुबारक' कहकर बिठा दिया।

प्रश्न 2.

आप कहानी को क्या शीर्षक देना चाहेंगे?

उत्तर-

हम इस कहानी का शीर्षक देना चाहेंगे- 'अप्पू के कंचे।

प्रश्न 3.

गुल्ली-डंडा और क्रिकेट में कुछ समानता है और कुछ अंतर। बताइए कौन-सी समानताएँ और क्या-क्या अंतर हैं?

उत्तर-

गुल्ली-डंडा ग्रामीण क्षेत्र का खेल है। गुल्ली डंडा में एक खिलाड़ी गुल्ली फेंकता है और दूसरा डंडे से उसे दूर तक फेंकने का प्रयास करता है। अन्य खिलाड़ी उस गिल्ली को कैच करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। क्रिकेट में बैट से गेंद को उछाला जाता है। बल्लेबाज द्वारा बल्ले से मारी गई गेंद को कैच करने का प्रयास किया जाता है। गुल्ली डंडा में मैदान और समय का कोई निश्चित पैमाना नहीं होता है। इसके अतिरिक्त क्रिकेट में ओवरों की संख्या निश्चित कर खेला जाता है और भारत के अलावे अन्य देशों में भी क्रिकेट खेला जाने वाला लोकप्रिय खेल हैं।

भाषा की बात

प्रश्न 1.
नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित मुहावरे किन भावों को प्रकट करते हैं? इन भावों से जुड़े दो-दो मुहावरे बताइए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
माँ ने दाँतों तले उँगली दबाई ।
सारी कक्षा साँस रोके हुए उसी तरफ़ देख रही है।
उत्तर-
दाँतों तले उँगली दबाना-आश्चर्य प्रकट करना
अन्य मुहावरे :- हक्का-बक्का रह जाना-मित्र की दुर्घटना का समाचार सुनकर मैं हक्का-बक्का रह गया।
विस्मित होना (हैरान होना)-ताजमहल की सुंदरता देखकर विदेशी सैलानी विस्मित हो गए।
साँस रोके हुए-(भयभीत होना)
दम साधे हुए-सभी छात्र दम साधे हुए परीक्षा परिणाम का इंतज़ार कर रहे हैं।
प्राण सूख जाना-सामने शेर को देखते ही शिकारी के प्राण सूख गए।

प्रश्न 2.

विशेषण कभी-कभी एक से अधिक शब्दों के भी होते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित हिस्से क्रमशः रकम और कंचे के बारे में बताते हैं, इसलिए वे विशेषण हैं।

पहले कभी किसी ने इतनी बड़ी रकम से कंचे नहीं खरीदे।

बढिया सफ़ेद गोल कंचे

इसी प्रकार के कुछ विशेषण नीचे दिए गए हैं इनका प्रयोग कर वाक्य बनाएँ-

ठंडी अँधेरी रात

खट्टी-मीठी गोलियाँ

ताजा स्वादिष्ट भोजन

स्वच्छ रंगीन कपड़े

उत्तर :-

- ठंडी अँधेरी रात में मैं डर के कारण सो नहीं पाया।
- खट्टी-मीठी गोलियाँ बच्चों को बहुत लुभाती हैं।
- ताजा स्वादिष्ट भोजन देखकर मेरे मुँह में पानी आ गया।
- स्वच्छ रंगीन कपड़े पहने वह लड़की सबको अपनी ओर आकर्षित कर रही थी।

धन्यवाद